***मां विंध्यवासिनी देवी आरती***

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनि,

तेरा पार न पाया |

पान सुपारी ध्वजा नारियल,

ले तेरी भेंट चढ़ाया |

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनि,

सुवा चोली तेरे अंग विराजै,

केसर तिलक लगाया |

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनि,

नंगे पग अकबर आया,

सोने का छत्र चढ़ाया |

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनि,

ऊंचे पर्वत भयो देवालय,

नीचे शहर बसाया |

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनि,

सतयुग, त्रेता द्वापर मध्ये,

कलियुग राज सवाया |

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनि,

धूप दीप नैवेघ आरती,

मोहन भोग लगाया |

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनि,

ध्यानू भगत मैया तेरे गुण गावै,

मनवांछित फल पावैं |

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनि,

तेरा पार न पाया |